अनुभव

''बच्चे कहानी सुनना पसन्द करते हैं, यह एक तथ्य है। लेकिन एक तथ्य यह भी है कि इन कहानियों का चुनाव वयस्क अमूमन अपनी रुचियों, हितों और समझ के आधार पर करते हैं। अक्सर सुनाई जाने वाली कहानी किसी मूल्य, नैतिकता या उपदेश की वाहक बनती है। क्या बच्चे कहानी इन्हीं मूल्यों उपदेशों या नैतिक सन्देशों को ग्रहण करने के लिए सुनते हैं या अपने मनोरंजन और दृष्टि विस्तार के लिए ? इस तरह से देखें तो कहानी सुनाना भी एक कौशल बन जाता है, जिसमें बच्चों की रुचि और दुनियावी सरोकार दोनों का तालमेल जरुरी होता है। इस संदर्भ में अपना अनुभव बांट रहे हैं कमलेश चन्द्र जोशी।

बच्चों को कहानी सुनाना – एक अवलोकन

❑ कमलेश चंद्र जोशी

उत्तर प्रदेश के तीन जिलों में कुछ प्राथमिक विद्यालयों में लगभग पंद्रह दिन का पूरा समय विभिन्न कक्षाओं में बिताने के दौरान हुआ यह अनुभव पहली कक्षा की प्रक्रियाओं के अवलोकन का एक हिस्सा है। इसके अंतर्गत प्राथमिक विद्यालय की एक शिक्षिका पहली कक्षा में बच्चों को कहानी सुना रही है।

जिस समय शिक्षिका कक्षा में आई, उस समय कक्षा के बच्चे अपने-अपने कार्यों में मशगूल थे। कुछ बच्चे शोर कर रहे थे, कुछ बच्चे घर से लाया हुआ नाश्ता खा रहे थे। शिक्षिका ने कक्षा में आते ही सबसे पहले बच्चों को ठीक से बैठने का निर्देश दिया। इसके बाद उन्होंने बच्चों को कहानी सुनाने का जिक्र किया। उन्होंने बच्चों को कहानी सुनाने की भूमिका कुछ इस प्रकार बनाई- ''बच्चों ! कहानी सुनोगे?'' बच्चे- ''जी टीचर जी'' टीचर- ''तो आगे आ जाओ और शोर बंद करो। कुछ बच्चे अपनी जगह से उठ-उठ कर आगे बैठ जाते हैं। कक्षा का शोर थोड़ा थम जाता है। शिक्षिका बच्चों से आगे बातचीत शुरू करती है- ''तुम लोगों ने बन्दर देखा है, न?'' बच्चे- ''जी टीचर जी।'' आगे शिक्षिका पूछती है- ''कैसा बन्दर देखा है''? कुछ बच्चे बताते हैं- ''लाल मुंह वाला।'' कुछ बच्चों ने कहा- ''बड़ी पूंछ वाला।'' शिक्षिका ने बच्चों को आगे बताया- ''काले मुंह और लम्बी पूंछ वाले को लंगूर कहते हैं, लाल मुंह वाले को बन्दर कहते हैं।'' फिर आगे शिक्षिका बच्चों से पूछती है- ''जंगल देखा है।''और अपनी बातचीत को आगे बढ़ाती है- ''जंगल में क्या होता है ?'' कुछ बच्चे कहते हैं- ''पेड़ होते हैं, लकड़ी होती है।'' आगे शिक्षिका पूछती है- ''और क्या होता है ?'' फिर कुछ बच्चे बताते हैं- ''पत्ते होते हैं, डाली होती है।'' शिक्षिका, 'पेड़ पर कौन-कौन रहता है ?'' कुछ बच्चे- ''चिड़िया रहती है।'' शिक्षिका- ''बंदर कहां रहते हैं ?'' एक बच्ची- ''बंदर पेड़ पर रहता है।'' यह तो था शिक्षिका द्वारा बच्चों को कहानी सुनाने के पूर्व वातावरण निर्माण।

आगे शिक्षिका कक्षा में विधिवत कहानी शुरू करती है। एक बरगद का पेड़ था। उस पर बदंर रहते थे। एक दिन की बात है। उस बरगद के पेड़ के नीचे कुछ आदमी लकड़ी काट रहे थे। इसके अंतर्गत शिक्षिका बच्चों से पूछती है, ''लकड़ी किससे काट रहे थे ?'' कुछ बच्चे एक साथ बोले, ''कुल्हाडी से।'' तब शिक्षिका ने कहा, ''कुल्हाड़ी से नहीं, आरी से। आरी तो तुम जानते ही होगे। तो आदमी आरी से लकड़ी काट रहे थे। लकड़ी काटते-काटते दोपहर हो गयी। उन आदमियों को भूख लग गयी और पास के अपने गांव में रोटी खाने के लिए चले गए। रोटी खाने जाने से पहले वे चिर रही लकड़ी में एक पच्चर फंसा गए। जिससे फिर से उसमें आरी डाल कर अपने लकड़ी काटने का काम शुरू कर सकें।'' फिर शिक्षिका ने कहानी इस प्रकार आगे बढ़ाई- ''तुम तो जानते ही होगे कि बंदर शरारती होते हैं। आदमियों के जाने के बाद वे लकड़ी के पास किसी को न देखकर नीचे उतर आये और सोचने लगे कि आरी से हम भी लकड़ी काटें। तब उनमें से एक बंदर पहले पच्चर हटाने की कोशिश करता है। लेकिन एकाएक क्या होता है कि इसी बीच में एक बंदर की पूंछ उसमें फंस गयी और वह रोने लगा। बड़ी मुश्किलों से अपने साथियों की मदद से वह अपनी पूंछ निकाल पाया, लेकिन इस निकालने में उसकी पूंछ थोड़ी कट जाती है'' कुछ इस तरह से शिक्षिका ने बच्चों को नटखट बंदर की पूरी कहानी सुनाई।

कहानी सुनाने के अंतर्गत यह भी देखने को मिला कि कक्षा में बहुत से बच्चे होने के कारण कुछ शोर भी होता रहा। लेकिन बाद में शिक्षिका ने बच्चों से पूछा- ''तो तुम लोगों को यह कहानी कैसी लगी?'' कुछ बच्चों ने कहा- ''जी अच्छी।'' फिर शिक्षिका ने आगे बच्चों से कहा- ''अब तुम लोग यह बताओ, इस कहानी से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है ?'' इस प्रश्न पर बच्चे शायद कुछ न समझे, न कुछ बोले। लेकिन शिक्षिका ने आगे अपनी बात इस तरह पूरी कर दी, ''देखो, जो शैतानी करता है उसको वैसा ही फल मिलता है। जैसे कि इस कहानी में बंदर शैतानी कर रहे थे तो उनमें

से एक बंदर की पूंछ कट गयी और उन्हें अपनी शैतानी करने का फल मिल गया। अगर तुम लोग भी शैतानी करोगे तो तुम्हें भी इस तरह का फल मिलेगा।''

यह है पहली कक्षा के बच्चों को कहानी सुनाने का एक अवलोकन। इस अवलोकन से मन में कुछ प्रश्न उठते हैं कि शिक्षिका ने कक्षा में बच्चों को कहानी मजे लेकर जरूर सुनाई लेकिन कहानी के अंत में आते-आते उसने बच्चों के मजे को चौपट कर दिया। कहां तो बच्चे कहानी की शुरूआत में बन्दर के क्रियाकलापों का आनन्द ले रहे थे और मन ही मन खुश हो रहे थे। लेकिन जब कहानी को शिक्षिका ने बच्चों की शैतानियों से जोड़ा तो बच्चों के कहानी सुनने का मजा किरकिरा कर दिया। इस तरह की बातें हमें कई अन्य विद्यालयों में मिल जाएंगी। अधिकतर यह सुनने में आता है कि पहली-दूसरी कक्षाओं के बच्चों को कहानी सुनने-सुनाने की प्रक्रिया तो आमतौर पर विद्यालयों में चलती रहती है। लेकिन यह देखने को मिलता है कि कहानी सुनाने वाले शिक्षक, एक शिक्षक होने के नाते, बच्चों को इसके माध्यम से भी ज्ञान देने का कोई मौका नहीं चूकना चाहते और वे ऐसी गलतियां करते रहते हैं। इसके साथ ही वे मनोरंजक कहानियों को भी एक पाठ पढ़ाने की तरह देखते हैं। जिस तरह कक्षा की पाठ्यपुस्तक के किसी पाठ से कोई नैतिक उपदेश/ज्ञान/शिक्षा बच्चों को प्रदान की जाती है, उसी प्रकार कहानी को भी देखा जाता है।

जबकि वर्तमान के अधिकतर शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में इस बात पर जोर दिया जाता है कि पहली व दूसरी कक्षाओं में बच्चों को इसलिए कहानियां सुनायी जाएं जिससे उनमें सुनने के कौशल का विकास हो। उनकी सोच व कल्पनाशीलता का दायरा बढ़े। उन्हें कहानी के साथ संबंध जोड़ने और अपने अनुभवों को व्यवस्थित करने का मौका मिले। इन बातों का असर सीधे-सीधे बच्चों की अभिव्यक्ति पर भी पड़ता है, क्योंकि हम बच्चों को तरह-तरह की कहानियां सुनायेंगे तो निश्चित रूप से उनकी सोच का दायरा भी विस्तृत होगा तथा इसकी परिणति आगे चलकर हमें बच्चों की लिखित भाषा के कौशलों में भी दिखाई दे सकेगी।

इन बातों के अलावा प्राथमिक कक्षाओं के अवलोकन में यह बात भी देखने को मिली कि अधिकतर शिक्षक केवल पाठ्य पुस्तकों की संकलित कहानियों पर ही केन्द्रित रहे। यहां कहने का अर्थ यह है कि उनके पास पाठ्यपुस्तक की चंद पांच-छ: कहानियों के अलावा अन्य कोई ऐसी कहानी नहीं थी, जिन्हें वे बच्चों को सुनाते। हां, यह कहना भी उपयुक्त होगा कि एक शिक्षक के लिए जरूरी है कि उसके पास बच्चों को सुनाने के लिए तीस-चालीस अच्छी कहानियों का भण्डार हो। यह मुश्किल कार्य भी नहीं है, क्योंकि विभिन्न परियोजनाओं के चलते लगभग हर प्राथमिक विद्यालय में बच्चों के लिए कुछ किताबें भी पहुंचीं हैं। जिनमें से बच्चों के स्तरानुसार चित्र कथाएं, बाल कहानियों और लोक कथाओं को छांटा जा सकता है। इसके अलावा प्राथमिक विद्यालय के हर शिक्षक को प्रतिवर्ष शिक्षण सामग्री हेतु पांच सौ रुपये की राशि भी दी जाती है। इससे भी बच्चों के लिए कुछ अच्छी पुस्तकें खरीद सकते हैं और उनका उपयोग बच्चों के साथ पढ़ने व सीखने की प्रक्रियाओं में कर सकते हैं। यहां यह भी जरूरी लगता है कि अगर शिक्षक इस बात की योजना बना लें कि वे अपनी समय सारणी में कौन से दिन कौन सी कहानी सुनाएंगे और उस पर क्या बातचीत करेंगे? कैसे सवाल पूछेंगे ? तो बेहतर होगा।

इसके साथ हमें एक बात पर और समझ बनाने की जरूरत है कि बच्चों को कहानी सुनाने का केवल यह मतलब भी नहीं है कि कहानियां याद करके मौखिक रूप से ही कहानियां सुनाई जाएं। हमें लगता है कि बच्चों को कहानी सुनाने के लिए चित्रात्मक पुस्तकों का भी बहुत अच्छी तरह इस्तेमाल किया जा सकता है। ऐसी पुस्तकें बाजार में उपलब्ध भी हैं और उन्हें बच्चों के साथ मिल-बैठ कर पढ़ा जा सकता है। इससे यह फायदा रहता है कि बच्चे कहानी सुनने के साथ-साथ उसके चित्रों की ओर भी आकर्षित होते हैं तथा इन चित्रों के द्वारा बच्चों को सोचने का आधार भी मिल जाता है। इसके आधार पर उनसे यह बात भी की जा सकती है कि इस कहानी में आगे क्या होगा ? इस बातचीत के द्वारा बच्चों को अनुमान लगाने का कौशल प्राप्त करने का मौका मिल सकेगा। जाहिर है कि अनुमान लगाना, पढ़ना सीखने के लिए एक महत्वपूर्ण कौशल है। इसके साथ ही चित्रात्मक पुस्तकों के चित्रों के आधार पर बच्चों से उनके आसपास के परिवेश पर भी बात करने का मौका मिल सकता है, क्योंकि बच्चे चित्रों को अपने आसपास के परिवेश से जोड़ते हैं। लेकिन इन प्रक्रियाओं में हमें यह ध्यान देना होगा कि बच्चों की कहानियों की विषय-वस्तु उनके अनुरूप व मनोरंजक हो। उनको कहानी सुनने/पढ़ने में मजा आए। इसी तरह से बच्चों की चित्रात्मक पुस्तकों के चित्र भी बच्चों की सोच के अनुसार कल्पनाशीलता व गत्यात्मकता लिए हों। बच्चे ऐसे ही चित्रों को पसंद भी करते हैं। चौखटे में कैद स्टिल चित्र बच्चों को बहुत प्रभावित नहीं करते। इस सबके अतिरिक्त कहानी के उपरांत शिक्षक बच्चों से कहानी/किताब पर बातचीत भी कर सकते हैं। इसके अंतर्गत शिक्षक बच्चों से कहानी को आगे बढ़वा सकते हैं, उसी में जोड़तोड़ करने को कह सकते हैं। बच्चों को अपने मन से भी कहानी गढ़ने को कह सकते हैं। इसके साथ ही बच्चों को सुनाई गई कहानी के आधार पर चित्रों को बनवाने का कार्य भी बहुत अच्छी तरह करवाया जा सकता है। बच्चों के इन चित्रों में भी हमें बच्चों की मौलिक अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। कुल मिलाकर कहने का तात्पर्य है कि बच्चों के लिए कहानियों को सुनना-सुनाना इस प्रकार हो जो बच्चों को कहानी से जुड़ने के मौके दे। उन्हें स्वयं सोचने के मौके दें। उन्हें कल्पना करने के मौके दे। न कि कहानी के द्वारा बच्चों को कोई नैतिक उपदेश, ज्ञान या संदेश की जरूरत है। ◆